इक्कीसवीं सदी का नव्य विमर्श

# किन्नर-विमर्श



सम्पादक

डॉ. रेखा दुबे

लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक को पूरी तरह अथवा आंशिकतौर पर या पुस्तक के किसी भी अंश की फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा इलेक्ट्रॉनिक अथवा ज्ञान के किसी भी माध्यम से संग्रह व पुनः प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रेषित, प्रस्तुत अथवा पुनरुत्पादित ना किया जाए। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के अपने विचार और सामग्री है, जिनसे प्रकाशक का कोई लेना-देना नहीं है।

Ekkisvin Sadi ka Navya Vimarsh : Kinnar-Vimarsh

by

Dr. Rekha Dubey

*I.S.B.N. : 978-81-8135-162-3*

© डॉ. रेखा दुबे

मूल्य : 550.00 रुपये

प्रथम संस्करण : सन् 2021

प्रकाशक : **पंकज बुक्स**

109-ए, पटपड़गंज गाँव, दिल्ली-110091

दूरभाष : 8800139684, 9312869947

वितरक : भावना प्रकाशन, दिल्ली

आवरण : नीरज

शब्द संयोजक : पंकज ग्राफिक्स, दिल्ली-110092

मुद्रक : राधा ऑफसेट, दिलशाद गॉर्डन, दिल्ली।

---

Published by :

Pankaj Books,

109-A , Patparganj Village, Delhi-110091, INDIA

E-mail : bhavnaprakashan@gmail.com

किन्नर : कल और आज
-डॉ. नेहा कल्याणी : 114

किन्नरों की दशा और दिशा
-रश्मि लहमोर : 125

किन्नर विमर्श : आज की आवश्यकता
-कण्डाला श्रीनिवास : 128

इक्कीसवीं सदी के संदर्भ में-हिन्दी साहित्य में किन्नरों की दशा
-ज्योति नरवाल : 136

हिन्दी साहित्य में किन्नर साहित्य एवं इनसे जुड़ी धरणा
-डॉ. रमेश टंडन : 139

साहित्य में किन्नर विमर्श
- सरोजनी सोनी : 144

हिंदी उपन्यासों में किन्नरों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण
-डॉ. सविता मिश्रा : 148

समकालीन हिंदी उपन्यासों में किन्नर जीवन-संघर्ष
-अन्तिमा गुप्ता : 154

पोस्ट बॉक्स न. 203 नाला सोपारा : किन्नर-जीवन के विविध परिप्रेक्ष्य
-बोबिजा : 160

मैं हिजड़ा.....मैं लक्ष्मी! लक्ष्मी जी के निर्भीक बोल
-डॉ. रेखा दुबे : 168

किन्नर...हिजड़ा और हमारा नजरिया
-डॉ. डोमन प्रसाद चन्द्रवंशी : 172

अस्तित्वहीन एक प्राणी
-डॉ. प्रीति प्रसाद : 176

वर्तमान समय में किन्नर समुदाय के सामाजिक बहिष्कार का अध्ययन
-शाहिद हुसैन : 179

हिन्दी सिनेमा में किन्नर विमर्श
-डॉ. शालिनी माहेश्वरी : 185

भारतीय सिनेमा में किन्नरों का अस्तित्व और सामाजिक प्रभाव
-संकल्प महंत : 192

फिल्मों एवं धारावाहिकों में प्रदर्शित किन्नर जीवन
-डॉ. आँचल श्रीवास्तव : 197

# हिन्दी साहित्य में किन्नर साहित्य एवं इनसे जुड़ी धारणा

डॉ. रमेश टंडन

स्त्री और पुरुष के अतिरिक्त हमारे समाज में एक और लिंग के लोग रहते हैं, जिन्हें समाज में छक्का, हिजड़ा, किन्नर, मामू, थर्ड जेंडर, तृतीयलिंगी, उभयलिंगी आदि के नामों से जाना जाता है। यह तृतीय लिंगी समाज हाशिये पर जीवन जीते हुए अपनी अस्मिता और जीवन दोनों को बचाने के लिए जद्दोजहद कर रहा है। हिन्दी साहित्य में पिछले कई वर्षों से हाशिये पर जीवनयापन कर रहे किन्नर समाज पर लिखा जा रहा है। इक्कीसवीं सदी में तो किन्नर समाज को केन्द्र में रखकर बहुत अधिक साहित्य लिखा गया है और लगातार लिखा जा रहा है। इन सारे साहित्य को यदि परखा जाए तो इनमें हमें किन्नरों के जीवन के सामाजिक यथार्थ की छवि साफ नजर आएगी। समाज में हाशिये पर जीवन व्यतीत करने वाले इन उभयलिंगी लोगों को साहित्य में पहचान मिली ही, साथ ही आज कुछ हद तक इन्हें समाज में भी सम्मान मिला है, फिर भी इनका जीवन आज भी संघर्षों से घिरा हुआ नजर आता है। जहाँ एक ओर सड़कों, बस स्टॉपों, ट्रेनों आदि में भीख माँगते हुए इनके संघर्ष को देखा जा सकता है, वही दूसरी ओर एक टोली बनाकर नाच-गाने के रूप में घर-घर जाकर बधाई गीत गाकर माँगते हुए भी उन्हें पाया जा सकता है। यह तृतीय लिंगी समुदाय आज न केवल हाशिये पर जीवन व्यतीत कर रहा है, बल्कि एक मनुष्य होने के बावजूद दोयम दर्जे का जीवन जीने को मजबूर है।

किन्नर समाज के लोग अपनी अलिंगी देह को लेकर जन्म से मृत्यु तक अपमानित, तिरस्कृत और संघर्षमयी जीवन व्यतीत करते हैं तथा आजीवन अपनी अस्मिता की तलाश में ठोकरें खाते हैं। हिन्दी साहित्य में लिखी आत्मकथाओं में देखने पर सहज ही ज्ञात होता है कि इन किन्नरों का जीवन कितना कठिन और संघर्ष से भरा है। 'मैं पायल' उपन्यास में यह गीत किन्नरों के सामाजिक यथार्थ को दर्शाने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है-'अधूरी देह क्यों मुझको

बनाया/ बता ईश्वर तुझे ये क्या सुहाया/ किसी का प्यार हूँ न वास्ता हूँ/ न मैं मंजिल हूँ मैं न रास्ता हूँ/ कि अनुभव पूर्णता का हो न पाया/ अजब खेल यह रह-रह धूप छाया'। किन्नर जीवन पर केन्द्रित इस गीत में उनके मर्म की पीड़ा का बयान साफ दिखाई देता है। किन्नर गुरु पायल सिंह के वास्तविक जीवन और उनके द्वारा किये गए संघर्ष पर आधारित इस उपन्यास में पूरे किन्नर समाज के यथार्थ को साफ देखा जा सकता है। उपन्यास में पायल तीखा सवाल उठाते हुए साफ कहती है-'हमें किन्नर नहीं, इंसान समझा जाए।'

बस, उनकी इतनी-सी माँग है कि वे मुख्यधारा से जुड़कर रहना चाहते हैं। वे समाज में अपनी हिस्सेदारी चाहते हैं। देश के विकास में वे भी अपना योगदान सुनिश्चित करना चाहते हैं। लेकिन मुख्यधारा का समाज ऐसा होने देना नहीं चाहता। समाज में इनके लिए जो धारणा बनी हुई है, वह जस की तस विद्यमान है। तभी तो इनका यथार्थ अंधेरे से घिरा हुआ दिखाई देता है, जिसे उजाले में लाने के लिए ये संघर्ष कर रहे हैं। 'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी' आत्मकथा किन्नरों के सामाजिक यथार्थ, उनके संघर्ष और उस संघर्ष के माध्यम से समाज में अपनी एक खास पहचान बना लेने की सच्ची कहानी है। इस आत्मकथा में लक्ष्मी के बचपन से अब तक के सफर के यथार्थ को रखा गया है। बुलंदी तक पहुँचने से पहले उसने जो संघर्ष किया, पीड़ा व दर्द सहा, वह किन्नरों के वर्तमान सामाजिक यथार्थ को समझने की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। छोटे होने पर अगर स्टेज पर नाचता था, तो लोग उसे छक्का, मामू कहकर चिढ़ाते थे, स्कूल में जाने पर बच्चों द्वारा उससे गलत तरीके से छेड़ना व तंग करना, मानसिक तौर पर उसे नीचा दिखाना आदि बातें साक्ष्य हैं कि किन्नर का जीवन कैसे बीतता है।

किन्नरों के समक्ष पैसा कमाने के दो ही जरिए बचे हैं-भीख माँगना या फिर देह व्यापार। घर पर नाच गाने के लिए जाना और वहाँ पहुँचकर घर वालों से बधाई माँगना आसान नहीं है। साथ ही घर-परिवार के लोग इन्हें अपने घर में नहीं आने देना चाहते। इसका कारण है समाज का इनके प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण।

'पुरुष तन में फंसा मेरा नारी मन' आत्मकथा में सोमनाथ एक ऐसा पुरुष है, जिसने जन्म तो एक पुरुष के रूप में लिया, किन्तु उसका मन, भावनाएँ और इच्छाएँ स्त्री जैसी हैं। इसी से उसे अपने जीवन में हिजड़ा, बृहन्नला आदि उपहासास्पद शब्दों का सामना करना पड़ता है। स्कूल में सहपाठियों द्वारा उसे चिढ़ाना, उसके बाद कॉलेज और नौकरी में भी इसी तरह का व्यवहार इनके सामाजिक यथार्थ के परिचायक हैं। ए. रेवती की 'हमारी कहानियाँ हमारी बातें' किन्नर समाज पर लिखा एक ऐसा ग्रन्थ है, जो स्वयं एक किन्नर की जुबानी

इसके समक्ष पहुँचाता है। किन्नर के रूप में रेवती का दर्द, उसकी पीड़ा, समाज में उसका उपहास और सामाजिक त्याज्य केवल उसकी ही नहीं, बल्कि पूरे किन्नर समाज की स्थिति को रेखांकित करता है। स्कूल, कॉलेज, बस स्टैंड, कार्य स्थल, घर, समाज बल्कि यों कहें कि प्रत्येक जगह पर उनके जीवन के साथ-साथ उनका संघर्ष चलता है।

इन आत्मकथाओं के अतिरिक्त हिन्दी में उपन्यासों के माध्यम से भी किन्नरों के सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्ति मिली है। भगवंत अनमोल कृत जिन्दगी 50-50, प्रदीप सौरभ कृत तीसरी ताली, निर्मला भुराड़िया कृत गुलाम मंडी, चित्रा मुद्गल कृत नाला सोपारा, महेन्द्र भीष्म कृत किन्नर कथा आदि कई उपन्यासों में किन्नर जीवन के दर्द, पीड़ा के साथ ही उनके प्रति सहानुभूति दोनो की अभिव्यक्ति हुई है। इन सभी लेखकों ने अपनी लेखनी के माध्यम से उनके लिए सामाजिक न्याय की माँग की है ताकि ये किन्नर लोग भी मुख्यधारा की तरह ही एक सम्माननीय जीवन व्यतीत कर सकें।

वर्तमान समय में अगर गौर से किन्नरों के समाज मे जाकर देखा जाए या फिर किन्नरों के जीवन पर नजर दौड़ायी जाए, तो साफ नजर आएगा कि इनकी अस्मिता संदिग्धों के घेरे में है। हालाँकि 21वीं सदी में इनको कुछ संवैधानिक अधिकार मिलें हैं, जैसे थर्ड जेंडर के रूप में मान्यता, समलैंगिक विवाह की मान्यता आदि; फिर भी इनका शोषण, सामाजिक तिरस्कार और उसके बाद जीवन के लिए की जा रही जद्दोजहद और संघर्ष कम होने का नाम नहीं ले रहा है। डॉ. एम फिरोज खान संपादित पुस्तक 'थर्ड जेंडर आत्मकथा और जीवन संघर्ष' की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-'हिजड़ों की न आवाज़ है, ना नाम, ना परिवार, ना इतिहास, ना प्यार, ना सोच, ना खुशी, ना गम, ना हक, ना व्यक्तित्व। हिजड़े अदृश्य हैं, न केवल हमारे मुख्यधारा के समाज में, बल्कि समाज के मन-मस्तिष्क के भीतर भी।'

ये अपने परंपरागत आचरण के कारण भीड़ में सबसे अलग-थलग नजर आते हैं। इनका पहनावा, बातचीत का लहजा, ताली बजाना, सदियों के अत्याचार और भेदभाव के चलते, अपनी एक अलग पहचान बनाने की प्रवृत्ति इनमें रही है। अपने पहनावे के जरिये या बोलने के लहजे से, वे किसी न किसी रूप से स्वयं को आइडेंटिफाई करना चाहते हैं। मुगलों के जमाने में किन्नर पुरुष वेशभूषा में ही रहते थे। साड़ी पहनने का रिवाज नहीं था। ताली बजाने की परंपरा कहीं न कहीं इसी मानसिकता से जुड़ी है कि मैं अपने जेंडर/लिंग की पहचान कैसे कराऊँ। यह मानसिकता अब परंपरा का रूप ले चुकी है। पर यह सब हमें कहीं

न कहीं आम जनता से अलग कर रहा है। कम्यूनिटी को चाहिए कि समाज से अलग दिखने व रहने की कोशिश न करे। हिजड़ों/किन्नरों को अपनी पारंपरिक छवि को बदलकर समाज की मुख्यधारा से जुड़ने की कोशिश करनी होगी, ताकि आम जनता उनकी उपस्थिति में स्वयं को असहज महसूस न करे। पर यह तभी संभव है जब समुदाय के लोगों की सोच बदलेगी।

किन्नर समुदाय के प्रति समाज में व्याप्त घनघोर भेद-भाव भरे रवैये के चलते विकट परिस्थितियों में जीते हुये युवा हिजड़ों/किन्नरों की क्षमताएँ कुंठित हो रही हैं और उनमें आक्रोश तथा क्रोध की भावना बढ़ रही है। रोजगार के अधिकतर द्वार उनके लिए बंद हैं। अतः उनके पास पेट भरने के लिए केवल भीख माँगने, घर-घर जाकर बधाई गाने और वेश्यावृत्ती करने के अलावा कोई और विकल्प बचता ही नहीं है।

इसलिए समुदाय के सदस्यों, विशेषकर हिजड़ों की युवा पीढ़ी को इन नकारात्मक परिस्थितियों से निकालकर एक स्वस्थ वातावरण में रखना जरूरी है। आज किन्नर समुदाय को अपने आचरण में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने ही होंगे और समुदाय के लोगों को आपस में लड़ाई-झगड़ा न करके एकजुट होकर काम करना होगा। तभी इनका विकास संभव है। यह केवल एक सामाजिक मुद्दा नहीं वरन मनोवैज्ञानिक मुद्दा भी है।

**इनसे जुड़ी कुछ धारणाएँ :**

इनकी शारीरिक बनावट पुरुष जैसी होती है या फिर स्त्री? अक्सर किन्नरों की शारीरिक बनावट पुरुष जैसी होती है। पूरी तरह किन्नर का रूप लेने के लिए ब्रेस्ट सर्जरी कराई जाती है, ताकि उनके समाज से लेकर आम लोगों के बीच भी उन्हें किन्नर के तौर पर देखा जाए। पुरुषों की तरह शरीर पर आने वाले बालों को हटाने के साथ-साथ बन-ठनकर रहना किन्नरों की इच्छा होती है।

मृत्यु के बाद किन्नर को रात 12 बजे के बाद ही श्मशान घाट ले जाया जाता है। उन्हें मारते-पीटते या फिर बालों से घसीटा जाता है, ताकि वे अगले जन्म में किन्नर न बन पाए। ऐसा शायद सतयुग में होता होगा कि किन्नर को इस प्रकार श्मशान घाट तक पहुँचाया जाता है। हकीकत यह है कि किन्नरों की मृत्यु होने के बाद उसका अंतिम संस्कार उसके धर्म के अनुसार किया जाता है। आम श्मशान घाट या कब्रिस्तान में ही किन्नरों का अंतिम संस्कार किया जाता है। हालांकि कोई किन्नर अंतिम संस्कार में शामिल नहीं होता। दरअसल, वे महिलाओं की तरह रहते हैं। जैसे आम महिलाएँ अंतिम संस्कार में शामिल नहीं होतीं, वैसे ही किन्नर भी शामिल नहीं होते।

आम लोगों में सुनने को मिलता है कि किन्नर की दुआ और बद्दुआ दोनों ही लगती हैं। किन्नर समुदाय के लोगों का कहना है कि किन्नर भगवान में असीम विश्वास रखते हैं। हम मानते हैं कि हमारा सीधा संपर्क भगवान से होता है। बचपन से लेकर बड़े होने तक वे दुख ही झेलते हैं। ऐसे में दुखिया दिल से निकली दुआ या बद्दुआ लगना स्वाभाविक है।

कैसे किन्नर जान जाते हैं कि छोटा-सा बच्चा बड़ा होकर किन्नर बन जाएगा। दरअसल, आम लोगों में यह अफवाह सुनने को मिलती है कि बच्चा किन्नर होने पर घर में आए तो किन्नर उन्हें ले जाते हैं। किन्नरों को पता लग जाता है कि किसी घर में किन्नर बच्चे का जन्म हुआ है। लड़के के जन्म पर वे पता लगा लेते हैं, लेकिन लड़की के बारे में अक्सर नहीं जान पाते। बच्चा किन्नर पैदा होता है, तो किन्नर उसे घर से ले जाते हैं और माँ-बाप को समझाते हैं कि यह बच्चा आपके लिए नहीं है। लड़की को बड़ा होकर ही पता चलता है कि वह असल में लड़की है या किन्नर। शुरुआती दौर में उसे लड़का बनने की इच्छा होती है। वैसे सेक्स से जुड़ी मानसिकता और रवैये से ही इस बारे में पता लग सकता है।

आम लोग इनके पारिवारिक जीवन के बारे में भी जानने को बेहद इच्छुक रहते हैं। काफी कम लोग होते हैं कि किन्नरों का समाज भी आम परिवारों की तरह ही होता है। इनमें सबसे ऊपर गुरु होते हैं, जो घर के बुजुर्ग होते हैं। घर को 'घराना' कहा जाता है। गुरु के नीचे काम करने वाले सभी चेले घराने की बहुएँ कहलाती हैं। हालांकि, घराने के अंदर भाई, बहन, बुआ, चाची, नानी, दादा, दादी आदि सभी का अपना स्थान है। जो किन्नर पुरुष की तरह रहता है, उसे भाई कहा जाता है। ऐसे ही महिला प्रवृति के किन्नरों को बहन का ओहदा दिया जाता है।

**सन्दर्भ :**


1. किन्नरों के जीवन का सच, सुशील कुमार
2. किन्नर समाज और सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष, शैलेन्द्र सिंह कुशवाह
3. नेट



-डॉ. रमेश टंडन
(सहायक प्राध्यापक-हिन्दी)
महात्मा गाँधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय
खरसिया, जिला-रायगढ़ छ.ग.
मो० नं 9685671975